



अपराधिक न्याय प्रणाली

प्रलिस के लिये:

[अनुच्छेद 246](#), राज्य सूची, [दंड प्रक्रिया संहिता, 1973](#), [सत्र न्यायाधीश](#), [जेल प्रणाली](#), [व्यावसायिक प्रशिक्षण](#), [उच्च न्यायालय](#), [सर्वोच्च न्यायालय](#), [फास्टट्रैक न्यायालय](#), [मानवाधिकार](#), [जमानत](#), [भारतीय वधिआयोग](#), [कानूनी सहायता](#) ।

मेन्स के लिये:

भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में शामिल खामियाँ और उन्हें दूर करने के उपाय ।

स्रोत: द हट्टि

चर्चा में क्यों?

हाल ही में बलात्कार के एक मगदम आरोप और उसके बाद कारावास की सजा ने हमारे कानून प्रवर्तन तंत्र में कई प्रणालीगत कमियों तथा सामाजिक जटिलताओं को उजागर किया है, जनि पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है ।

भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली (CJS) कैसी है?

परचिय:

- किसी भी राज्य की आपराधिक न्याय प्रणाली, **आपराधिक न्याय के प्रशासन के लिये सरकारों** द्वारा स्थापित एजेंसियों और प्रक्रियाओं का समूह है, जिसका उद्देश्य **अपराध** को नयितरति करना तथा कानून का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को **दंड** देना है ।
- भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली 1860 में लागू **भारतीय दंड संहिता (Indian Penal Code- IPC)** पर आधारित है ।
- भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 246** में **पुलिस**, **सार्वजनिक व्यवस्था**, **न्यायालय**, **जेल**, **सुधारगृह** और अन्य संबद्ध संस्थाओं को **राज्य सूची** में रखा गया है ।
 - हालाँकि, **संघीय कानूनों** का पालन पुलिस, न्यायपालिका और सुधार संस्थानों द्वारा किया जाता है, जो आपराधिक न्याय प्रणाली के मूल अंग हैं ।

CJS की संरचना: इसमें चार मुख्य स्तंभ शामिल हैं ।

- पुलिस द्वारा जाँच:** **दंड प्रक्रिया संहिता, 1973** की धारा 161 जाँच अधिकारी को संबद्ध मामले के बारे में जानने वाले किसी भी व्यक्त से पूछताछ करने और उनका बयान दर्ज करने की अनुमति देती है ।
- अभियोक्ताओं द्वारा मामले का अभियोजन:** **अभियोक्ता** अभियुक्त पर अपराध का आरोप लगाते हैं और न्यायालय में यह सदिध करने का प्रयास करते हैं कविह दोषी है ।
- न्यायालय द्वारा दोष का नरिधारण:** न्यायालय अपने **वविकाधिकार** का उपयोग करते हुए, अपराधी की पृष्ठभूमि, और उसके **सुधार** की संभावना को ध्यान में रखते हुए दंडादेश देता है ।
- कारावास प्रणाली के माध्यम से सुधार:** भारत में कारावास का उपयोग **शिक्षा**, **श्रम**, **व्यावसायिक प्रशिक्षण** और **योग** व **साधना** के माध्यम से कैदी में **सुधार एवं उसके पुनरवास** के लिये किया जाता है ।

भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली में क्या चुनौतियाँ शामिल हैं?

- मामलों का लंबति रहना:** जुलाई 2023 तक, भारत के सभी न्यायालयों में **5 करोड से अधिक** मामले लंबति थे ।
 - इनमें से **87.4% अधीनस्थ न्यायालयों** में, **12.4% उच्च न्यायालयों** में लंबति है, जबकलिंगभग **1,82,000** मामले 30 वर्ष से अधिक समय से लंबति हैं । **सर्वोच्च न्यायालय** में लंबति मामलों की संख्या **78,400** थी ।
- न्यायिक रक्तियाँ:** भारत में **प्रति दस लाख लोगों पर केवल 21 न्यायाधीश** हैं, जो कप्रति **दस लाख लोगों पर 50 न्यायाधीशों के** दीर्घकालिक लक्ष्य से कम है जिसके परिणामस्वरूप मामलों के नपिटान में वलिंब होता है ।
- फास्ट-ट्रैक कोर्ट के संबंध में धीमी प्रगत:** **फास्ट-ट्रैक कोर्ट** हमेशा पूर्ण क्षमता से कार्य करने में अक्षम रहा है ।

- नए न्यायालय आवश्यक बुनियादी ढाँचे और समर्पित न्यायाधीशों के साथ **फास्ट-ट्रैक उद्देश्यों** के लिये स्थापित नहीं किये जाते हैं।
- इसके बजाय, **मौजूदा न्यायालयों** को प्रायः **फास्ट-ट्रैक कोर्ट के रूप में नामित** किया जाता है, जिससे न्यायाधीशों को इन त्वरित मामलों के साथ-साथ अपने नियमित केसलोड का प्रबंधन करना होता है।
- **पुलिस द्वारा शक्तिका दुरुपयोग:** पुलिस पर प्रायः **अनुचित गरिफ्तारी, वधिविरुद्ध कारावास**, सदोष तलाशी, उत्पीड़न, हरिसत में व्यक्तिके साथ **हिसा** और उसकी मृत्यु आदि का आरोप लगाया जाता है।
 - इसके अतिरिक्त, **नविकरक कानूनों** के आधार पर पुलिस की शक्ति लगातार बढ़ती जा रही है।
- **जटिल तंत्र:** वर्तमान समय में न्याय तंत्र **बहुत जटिल** है और **हाशियाई समुदाय के व्यक्तियों** की पहुँच से यह बहुत दूर है।
 - समाज में **सुभेद्य वर्ग** हमेशा उस प्रणाली में वंचित रहेंगे जो क्षमता निर्माण की तुलना में संस्थागत व्यवस्था को प्राथमिकता देती है।
- **अनुमानित पूर्वाग्रह:** भारतीय जेलों में **आदवासी, ईसाई, दलित, मुसलमि और सखि** समुदाय के व्यक्तियों की संख्या, कुल आबादी में उनके प्रतिशत की तुलना में **बहुत अधिक** है।
- **कारावास में मानवाधिकारों का उल्लंघन:** अपराध स्वीकार कराने और अपराधों की जाँच करने के नाम पर, अधिकारी कैदियों को शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते हैं।
 - महिलाओं के संदर्भ में **हरिसत में बलात्कार, छेड़छाड़** और अन्य प्रकार के **लैंगिक शोषण** के रूप में अत्याचार भी किये जाते हैं।

भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली में किस प्रकार सुधार किया जा सकता है?

- **ज़मानत में सुधार:** "**ज़मानत नयिम है और जेल एक अपवाद है**" एक न्यायिक सिद्धांत है जिसका नरिणय सर्वोच्च न्यायालय ने वर्ष 1978 में **212/78, 213/78, 214/78, 215/78, 216/78, 217/78, 218/78, 219/78, 220/78, 221/78, 222/78, 223/78, 224/78, 225/78, 226/78, 227/78, 228/78, 229/78, 230/78** मामले में किया था।
 - अपनी **268वीं रिपोर्ट** में, भारतीय **वधिकायोग** ने जोर देते हुए कहा कि **नरिधि** की अवधि को **कम करने** के लिये तत्काल उपाय किये जाने की आवश्यकता है और यह नरिणय किया कि इसे रोकने के लिये **ज़मानत** से संबंधित कानून पर **पुनः वधिका** किया जाना चाहिये।
- **फास्ट-ट्रैक न्यायालयों को पुनः क्रियाशील करना:** इन न्यायालयों को **"वास्तव में फास्ट-ट्रैक"** बनाने के लिये लंबे समय से लंबित सत्र मामलों का **शीघ्र निपटान** किया जाना चाहिये।
- **वधिका सहायता में सुधार:** CJS की कार्य क्षमता को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु सामाजिक-वधिका सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिये युवा पेशेवरों को **प्रशिक्षण** देने, उनका **मार्गदर्शन** करने और उनकी **क्षमता का निर्माण करने की आवश्यकता** है।
- **न्यायिक रक्तियों की पूर्ता:** **कार्यात्मक और नषिपक्ष न्यायिक प्रणाली** को बनाए रखने के लिये न्यायिक रक्तियों की प्रभावी ढंग से पूर्ता करना महत्त्वपूर्ण है। इसके लिये अतिरिक्त ज़िला न्यायाधीशों और ज़िला न्यायाधीशों के सत्र पर न्यायाधीशों की भरती के लिये **अखलि भारतीय न्यायिक सेवा (AIJS)** का उपयोग किया जा सकता है।
- **दांडकि मामलों के प्रबंधन में कृत्रिम मेधा (AI) का अनुप्रयोग:** AI का उपयोग न्यायाधीशों द्वारा **ज़मानत, सज़ा और पैरोल** के संबंध में नरिणय लेने में मदद करने के लिये किया जा सकता है।
 - AI का उपयोग अपराधियों द्वारा **पुनः अपराध करने (Recidivism)** के जोखिम का आकलन करने के लिये किया जा सकता है।

सरकार द्वारा की गई संबंधित पहल:

- **न्याय प्रदान करने और कानूनी सुधारों के लिये राष्ट्रीय मशिन**
- **AI पोर्टल SUPACE**
- **पुलिस योजना का आधुनिकीकरण**
- **भारतीय न्याय (द्वितीय) संहिता, 2023**
- **भारतीय नागरिक सुरक्षा (द्वितीय) संहिता, 2023**
- **भारतीय साक्ष्य (द्वितीय) वधियक, 2023**

CJS में सुधार के लिये कौन-से आयोग गठित किये गए हैं?

- **राष्ट्रीय पुलिस आयोग (NPC):** इसने सफिराशि की कि **हरिसत में मृत्यु अथवा बलात्कार** के मामलों में **न्यायिक जाँच** की जानी चाहिये।
- **मलमिथ समिति:** इसने कानून और व्यवस्था बनाए रखने तथा अपराध जाँच के लिये एक **अलग पुलिस बल** की आवश्यकता की सफिराशि की।
- **अखलि भारतीय जेल सुधार समिति (मुल्ला समिति):** इसने जेलों के प्रशासन के लिये उचित और प्रशिक्षित कर्मचारियों की भरती पर जोर दिया तथा इस उद्देश्य के लिये एक सुधारात्मक सेवा स्थापित की जानी चाहिये।
- **कृषणन अय्यर समिति:** इसने **महिला और बाल अपराधियों** से निपटने के लिये पुलिस में **महिला कर्मियों** की नियुक्ति की सफिराशि की।

भारत में पुलिस सुधार



संवैधानिक स्थिति:

- पुलिस एवं लोक व्यवस्था: राज्य सूची के विषय (7वीं अनुसूची)



सुधार की आवश्यकता:

- औपनिवेशिक कानून
- हिरासत में मौत
- जवाबदेहिता की कमी
- राजनीतिक हस्तक्षेप
- लैंगिक संवेदनशीलता की खराब स्थिति
- सांप्रदायिक/जातिगत पूर्वाग्रह
- कोई अत्याचार विरोधी कानून नहीं



संबंधित डेटा:

- पुलिस-पीपल अनुपात: 153 पुलिस/100,000 लोग (वैश्विक बेंचमार्क: 222 पुलिस/100,000 लोग)
- हिरासत में मौतें: 2021-2022 में 175 (गृह मंत्रालय के अनुसार)
- महिलाओं की हिस्सेदारी: संपूर्ण बल का 10.5% (इंडिया जस्टिस रिपोर्ट 2021)
- अवसंरचना: 3 में से 1 पुलिस स्टेशन सीसीटीवी से लैस है (इंडिया जस्टिस रिपोर्ट 2021)



पुलिस सुधार पर महत्वपूर्ण समितियाँ/आयोग:



संबंधित पहलें:

- स्मार्ट पुलिसिंग (अखिल भारतीय)
- स्वचालित मल्टीमॉडल बायोमेट्रिक पहचान प्रणाली (AMBIS) (महाराष्ट्र)
- रियल टाइम विज़िटर मॉनिटरिंग सिस्टम (ए.आई. और ब्लॉकचेन आधारित) (आंध्र प्रदेश)
- साइबरडोम (टेक आर एंड डी सेंटर) (केरल)



पुलिसिंग के साथ चुनौतियाँ:

- निम्न पुलिस-जनसंख्या अनुपात
- राजनीतिक अधिरोपण
- असंतोषजनक पुलिस-पब्लिक संबंध
- इन्फ्रा घाटा
- भ्रष्टाचार
- कम कर्मचारी/अत्यधिक भार

आगे की राह:

- ↑ पुलिस बजट, संसाधन
- ↑ भर्ती प्रक्रिया
- भ्रष्टाचार को कम करने के उपाय लागू करें
- ↑ पुलिसकर्मियों का कौशल
- बेहतर प्रतिनिधित्व (महिलाएँ, अल्पसंख्यक)



//

CJS के सुधार से संबंधित न्यायिक निर्णय क्या हैं?

- [\[REDACTED\]](#), 2006 : माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नरिणय कयिा कफुलसि के कारुय पर नज़र रखने हेतु प्रत्येक राज्य में एक राज्य सुरक्षा आयोग स्थापति कयिा जाना चाहयि ।
- [\[REDACTED\]](#), 2007 : इसमें नरिणय कयिा गया कभिले ही कैदयिों की स्वतंत्रता और उनके मुक्त आवागमन का अधकार प्रतर्बिधति हो कतिु उन्हें **स्वस्थ जीवन नरिवाह करने का मूल अधकार** है ।
- [\[REDACTED\]](#), 1988 : यह अभनिरिधारति कयिा गया कजेल में कैदयिों को उनके दवारा कयिा जाने वाले कारुय अथवा शरम का **उचति वेतन** दयिा जाना चाहयि ।
- [\[REDACTED\]](#), 1979 : वचिाराधीन कैदयिों को उनकी सज़ा से ज़ुयदा समय तक जेल में रखना **अनुच्छेद 21** के तहत गारंटीकृत उनके मूल अधकारों का **स्पष्ट उल्लंघन** है ।
- [\[REDACTED\]](#), 1980 : इसमें यह नरिणय कयिा गया क**हथकड़ी लगाने की प्रथा अमानवीय, अनुचति और कठोर** है और इसलयि कसिी अभयिुक्त वुयकृती को प्रथमतः हथकड़ी नहीं लगाई जानी चाहयि ।

नषिकरुषः

भारतीय दांडकि नुयय प्रणाली को बड़ी संखुया में लंबति मामलों, अकृषमता, संसाधनों की कमी, अनुपयुक्त बुनयिादी ढाँचे और कर्मुयिों के लयि अपरुयाप्त प्रशकृषण जैसी चुनौतयिों का सामना करना पड़ रहा है । हालाँक, इस प्रणाली में वशिषकर हाशयिाई समुदाय के वुयकृती के लयि नुयय कर्बेहतर पहुँच सुनशिचति करते हुए इसे बेहतर बनाने के प्रुयास कयिा जा रहे हैं ।

दृषुट भेनुस प्रुशनः

प्रुशन. भारत में दांडकि नुयय प्रणाली की हाल ही में हुई वफिलताओं और कर्मुयिों के प्रुकाश में इसमें सुधार करना आतुयावश्यक हो गया है । कुया आप इस मत से सहमत हैं?

UPSC सविलि सेवा परीकृषा, वगित वरुष के प्रुशन

प्रुशन. भारत में उचुचतर नुययपालकिा में नुययाधीशों की नयिुकृती के संदरुभ में 'राषुटरीय नुययकि नयिुकृती आयोग अधनियिम, 2014' पर सर्वोच्च नुययालय के नरिणय का समालोचनातुमक परीकृषण कीजयि । (2017)